शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 7 | उदयपुर शनिवार 15 अप्रेल 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

हमारे शरीर के भीतर शरीर और फिर शरीर

-आचार्य महाप्रज्ञ-

अनेक स्त्री-पुरुष सुन्दर आकृति वाले होते हुए भी अच्छे नहीं लगते। आकृति सुन्दर है पर प्रकृति असुन्दर है। व्यक्ति की आकृति आकृष्ट नहीं करती। आकृष्ट करता है आभा मंडल। जिसका आभा मंडल जितना निर्मल, स्वच्छ और पवित्र होगा, उतना ही वह आकर्षण का केन्द्र बनेगा। गांधी का सूक्ष्म शरीर तैजस शरीर और सूक्ष्मतर शरीर कर्म-शरीर दोनों आकर्षक और शक्ति-सम्पन्न थे।

हमारे शरीर के भीतर एक शरीर और है। वह है तैजस शरीर, विद्युत शरीर। इसी से स्थूल शरीर की सारी प्रवृत्तियां संचालित होती हैं। प्राणशक्ति हमारी हर गतिविधि को प्रभावित करती है पर उससे भी हमारे व्यक्तित्व की पूरी व्याख्या नहीं होती। प्रश्न बना ही रहा कि आदमी के आचरण को कौन प्रभावित करता है? जन्म और मृत्यु को, सुख-दुख के संवेदन को, ज्ञान और दर्शन की शक्ति को कौन प्रभावित कर रहा है?

हमारे भीतर एक शरीर और है जो इन सारी प्रवृत्तियों को प्रभावित कर रहा है। वह सूक्ष्मतर शरीर है। स्थूल शरीर प्रत्यक्ष है। सूक्ष्म शरीर का कुछ स्थितियों में प्रत्यक्षीकरण किया जा सकता है। इन्द्रीय शक्ति से नहीं देखा जा सकता। यह अतीन्द्रिय ज्ञान का विषय है।

आदमी स्थूल शरीर के प्रति बहुत जागरूक है। वह इसको तनिक भी कष्ट देना नहीं चाहता। प्राय: उठने से लेकर सोने तक इसकी बहुत सार-संभाल करता है। सूक्ष्म शरीर के प्रति भी वह कुछ जागरूक है। वह देखता है, शरीर की लालिमा कैसी है? कितनी सुन्दर है? पर सूक्ष्मतर शरीर के प्रति कम जागरूक है। आदमी प्रतिभावान, बौद्धिक, भला या अच्छा बनता है, पर इस शरीर से नहीं बनता। यह सारा स्थूल शरीर का परिणाम है।

अनेक स्त्री-पुरुष सुन्दर आकृति वाले होते हुए भी अच्छे नहीं लगते। आकृति सुन्दर है पर प्रकृति असुन्दर है। प्रारम्भ में आकृति अच्छी लगती है और दीर्घकाल में प्रकृति। आकृति और प्रकृति दोनों भीतरी कारणों से आती है। व्यक्ति की आकृति आकृष्ट नहीं करती। आकृष्ट करता है आभा मंडल। जिसका आभा मंडल जितना निर्मल, स्वच्छ और पवित्र होगा, उतना ही वह आकर्षण का केन्द्र बनेगा।

गांधी की आकृति इतनी सुन्दर या मनमोहक या आकर्षक नहीं थी किन्तु आभा मंडल इतना तेजस्वी और शक्तिशाली था कि पंडित नेहरू जैसे पदार्थवादी सभ्यता के अग्रणी व्यक्ति भी उनके व्यक्तित्व के प्रति पूर्ण समर्पित थे।

गांधी का सूक्ष्म शरीर तैजस शरीर और सूक्ष्मतर शरीर कर्म-शरीर दोनों आकर्षक और शक्ति-सम्पन्न थे। उन दोनों शरीरों का ही यह आकर्षण था कि करोड़ों लोग उनके भक्त और प्रशंसक बन सके। वह चुम्बक था, जो सबको अपनी ओर खींच रहा था। तैजस शरीर को चुम्बक शरीर कहा जा सकता है।

हम फिर इस बात का ध्यान दें कि व्यक्तित्व और कृर्तत्व की व्याख्या के लिए सूक्ष्म शरीर की व्याख्या बहुत आवश्यक है। जब हम सूक्ष्म शरीर की भूमिका पर जाते हैं तब अनायास ही अनेक समाधान प्राप्त हो जाते हैं।

आज शरीर विज्ञान के आधार पर अनेक बातों का समाधान प्रस्तुत किया जाता है। मानस-शास्त्रियों ने मानसिक संरचना के आधार पर अनेक प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत किये हैं पर कई प्रश्न ज्यों के त्यों बने हुए हैं। इन सबका कारण यह है कि सूक्ष्म शरीर की भूमिका पर पहुंचे बिना इनका समाधान नहीं दिया जा सकता है।

महावीर का संदेश आज अधिक प्रासंगिक

-डॉ. तुक्तक भानावत-

महावीर ने केवल मनुष्य जाति की ही नहीं, सभी प्राणियों की रक्षा करने का उपदेश दिया। उनकी दृष्टि में किसी को मारना ही हिंसा नहीं है, किसी को बुरा वचन कहना, किसी का बुरा सोचना भी हिंसा है।

महावीर ने आत्म नियंत्रण, संयम और इच्छाओं को सीमित करने का उपदेश दिया। आवश्यकता का घटना-बढ़ना इच्छा पर निर्भर करता है। इच्छाएं आकाश के समान अनंत और अपार हैं। किसी एक वस्तु की प्राप्ति पर इच्छा पूरी नहीं होती। नई-नई इच्छाएं और पैदा हो जाती हैं, फलस्वरूप लोभ और संचय वृत्ति का फलक बढ़ता जाता है। इस दुष्चक्र से मुक्त होने के लिए महावीर ने गृहस्थों के लिए परिग्रह की मर्यादा करने का उपदेश दिया। आवश्यकताओं को कम करने पर बल दिया। गृहस्थों के लिए निर्धारित बारह-व्रत समतावादी समाज-रचना में प्रभावकारी भूमिका निभाने में सक्षम हैं।

अहिंसा-व्रत की परिपालना के संदर्भ में महावीर ने कहा कि ऐसे नियम न बनायें जो गरीबों के लिए भारभूत हों। पशुओं, मजदूरों पर अधिक बोज लादते हों। बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि रूढ़ियों को बढ़ाते हों। व्यक्ति को भोजन-पानी से वंचित रखते हों।

सत्य के रक्षण के लिए उन्होंने कहा कि व्यक्ति कन्या के विषय में, धरोहर के विषय में, भूमि-जायदाद आदि के विषय में झूठ न बोले। झूठी साक्षी न दे। झूठे लेख, झूठे दस्तावेज आदि न लिखे। उन्होंने कहा कि सेंध लगाने, डाका डालने, ठगने, जेब कतरने वाले ही चोर नहीं हैं वरन् खाद्य वस्तुओं में मिलावट करने वाले, एक वस्तु बताकर दूसरी लेने-देने वाले, कम तोलने और कम नापने वाले, चोरों द्वारा हरण की गई वस्तु खरीदने वाले, चोरों को चोरी की प्रेरणा देने वाले, झूठा जमा-खर्च करने वाले, अवैध रूप से अधिक सूद पर रुपया देने वाले भी चोर हैं।

महावीर ने ऐसे कार्यों का निषेध किया जिनमें अधिक हिंसा होती है और जो समाज के लिए हितकारी नहीं है। ऐसे कार्यों में जंगल को जलाना, पेड़ों को काटना, मादक पदार्थों के लेन-देन करना, स्त्रियों को बेचना, असामाजिक तत्वों को पोषण देना आदि समाविष्ट हैं।

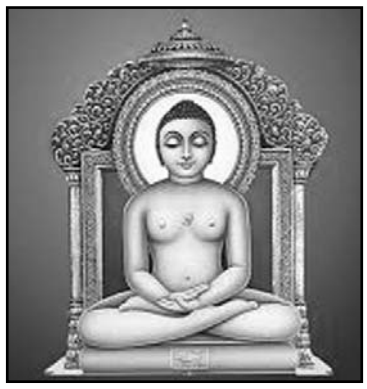

भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी पिलाना, जरूरतमंद को मकान आदि देना, वस्त्र देना, मन, वचन और शरीर की शुभ प्रवृत्ति से समाज की सेवा करना, संतों, विद्वानों का आदर-सत्कार करना महावीर की दृष्टि में अहिंसा की पुष्टि करने वाले कार्य हैं।

किसी वस्तु की एक अवस्था देखकर उसे ही सत्य मान लेना और उस पर अड़े रहना हठवादिता या दुराग्रह है। एकांत दृष्टि से किसी वस्तु विशेष का समग्र ज्ञान नहीं किया जा सकता। सापेक्ष दृष्टि से, अपेक्षा विशेष से देखने पर ही उसका सही व संपूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

महावीर ने स्पष्ट कहा कि प्रत्येक जीव का स्वतंत्र अस्तित्व है। इसलिए उसकी स्वतंत्र विचार-चेतना भी है। अत: जैसा तुम सोचते हो, एकमात्र वही सत्य नहीं है। दूसरे जो सोचते हैं, उसमें भी सत्य का अंश निहित है। अत: पूर्ण सत्य का साक्षात्कार करने के लिए इतर लोगों के सोचे हुए, अनुभव किये हुए सत्यांशों को महत्व दो।

उनको समझो, परखो और उसके आलोक में अपने सत्य का परीक्षण करो। इससे न केवल तुम्हें उस सत्य का साक्षात्कार होगा वरन् अपनी भूलों के प्रति सुधार करने का अवसर भी लेगा। इस दृष्टि से वर्तमान युग की पूंजीवादी-समाजवादी, विचारधाराओं को समझकर उसमें समन्वय स्थापित कर आत्यंतिक विरोध मिटाया जा सकता है।

यह बड़ी विडम्बना है कि महावीर के तथाकथित अनुयायी आज अत्यधिक परिग्रही हैं। उनमें से बहुत कम ऐसे हैं जिन्होंने अपने परिग्रह की मर्यादा बांध रखी हो और आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति का उपयोग वे जनकल्याण के लिए करते हों। आवश्यकता इस बात की है कि परिग्रह परिमाणधारी श्रावकों की संख्या अधिकाधिक बढ़े।

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि जैन धर्म मूलत: जनक्रांति और आत्मक्रांति का धर्म रहा है। जब ये दोनों क्रांतियां समानान्तर चलती हैं तब आत्मधर्म और समाजधर्म में सन्तुलन बना रहता है पर जब यह सन्तुलन बिगड़ता है तब स्थिति के अनुसार आत्मधर्म अथवा समाजधर्म में से किसी एक को प्रधानता देनी पड़ती है।

मेरी दृष्टि में पर्युषण पर्व की साधना और महावीर के निर्वाण दिवस की आराधना-उपासना में हमारा ध्यान आत्मधर्मिता को जागृत करने पर विशेष रहता है। यदि हम महावीर जयंती को मनाते समय समाजधर्मिता पर विशेष बल देते हुए, जनजागृति का आह्वान कर सकें और उसके अनुरूप रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकें तो हम महावीर की विचारधारा को सही परिप्रेक्ष्य दे पायेंगे।

महावीर जन्मजात क्रान्ति पुरुष थे। उन्होंने विचार और आचार दोनों धरातलों पर आत्म-क्रान्ति के साथ-साथ जन-क्रान्ति की। उनकी क्रान्ति में अहिंसा और अभय का अद्‌भुत मेल था। स्वतंत्रता और समानता की अनूठी संधि थी। महावीर की यह क्रान्ति जन-क्रान्ति बन कर जन-जीवन में फूटे, आज इसकी अपेक्षा है।

इसके लिए आवश्यक है कि हम धार्मिकों के जीवन में ही क्रान्ति न लावें वरन् धर्म को भी क्रान्ति के वाहक के रूप में प्रतिपादित और मूल्यांकित करें तब ही महावीर जयंती मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

स्मृतियों के शिखर (30) : डॉ. महेन्द्र भानावत

दंडीस्वामी महन्त मोहनानंद

आमेटा समाज में कई ऐसी विभूतियां हुईं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों से विशिष्ट पहचान बनाई। कहा जाता है कि गुजरात प्रांत के लाट प्रदेश से सहस्त्र औदिच्य ब्राह्मणों का एक दल मेदपाट- मेवाड़ में चारभुजारोड़ आमेट आकर बस गया। कालान्तर में आमेट नाम से एक जाति ही विकसित हुई जो आमेटा कहलाई। इस संबंध में कहा गया है- सामेट ग्रामे वसनाद्बभूव आमेटाख्य समागता।

अद्भुत आमेटा समाज :

आमेटा जाति में जो विभूतियां हुईं उनमें मेवाड़ महाराणा मोकल, लाखा और कुंभा के राजगुरु तांत्रिक तिल्हण भट्ट (टीला भट्ट, गादोली), महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित राजसमंद पर आयोजित यज्ञ में मंत्र बल से अग्नि प्रज्वलित करने वाले लक्ष्मीदास (कथा व्यास, नवाणिया), नर्मदा तट के तपस्वी संत विद्यानंद (नंदराम, नवाणिया), उत्तराखंड के योगाचार्य हरिहरानंद (भभूतशंकर, खेड़ी), सनातन और जैनधर्म के समन्वयक धर्मसागर महाराज (चुन्नीलाल, कुराबड़), रामानुज सम्प्रदाय के प्रसिद्ध संत हरिरामाचार्य (बनेड़ा), एकलिंगजी के पीठाधीश गोस्वामी राघवानंद, संत परमानंद (सलूम्बर) आदि संत तथा विद्वत्वर्य अभिनव मम्मट गिरधरलाल शास्त्री एवं नव पाणिनी पं. बालकृष्ण शास्त्री (उदयपुर) के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी क्रम में महंत मोहनानंद दंडी स्वामी (मोहनलाल, कुराबड़) का नाम अग्रणी है।

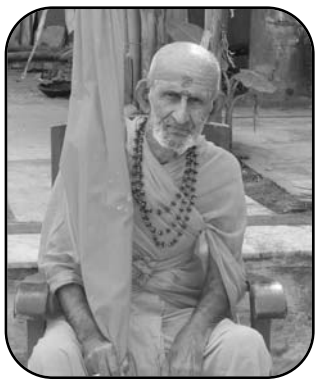

महन्त मोहनानन्द का जन्म राजस्थान के डूंगरपुर जिले के गांव बनकोड़ा में 10 अगस्त 1922 को हुआ। पिता गोरधनलाल कश्यप के घर सातवीं कक्षा तक बनकोड़ा में अध्ययनोपरांत भूपालसागर की शूगर मिल में पांच वर्ष रहे जहां वे गन्नों से भरी बैलगाड़ियां तोलने का काम करते रहे। सर्दी में औसतन पचास गाड़ियां प्रतिदिन आतीं। इधर तीन तरह के गन्नों की पैदावार होती। काले गन्ने थोड़े लम्बे और पतले होते। इन्हें सियार अपना भोजन नहीं बनाते। सफेद गन्ने अपेक्षाकृत छोटे जबकि पैंडा गन्ने नरम, रसवाले तथा मोटे होते। एक बार गन्ने की पंगेरी बोने पर तीन वर्ष लगातार फसल होती। तब गन्ना एक रुपया चौदह आना मन के भाव से खरीदा जाता। गाड़ी में साठ मन वजन होता। तब सोलह आने का एक रूपया होता तथा एक आने में बारह पाई चलती। इसी प्रकार चालीस सेर का एक मन होता। आज एक मन का वजन ढाई क्विंटल बैठता है।

मोहनानन्द ने लगभग बीस वर्ष उदयपुर जिले के करावली गांव की जैन पाठशाला में अध्यापन किया। इस बीच उनका गांव के ही रामकृष्ण गुड़लिया की पुत्री नाथीबाई से विवाह कर दिया गया। तेईस वर्ष गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के पश्चात उनकी पत्नी का निधन होने पर उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। वे संन्यासी बन गये और उदयपुर से कोई पच्चीस किलोमीटर दूर झामेश्वर महादेव की सेवा-पूजा में लग गये। यहां वर्ष भर रहने के उपरान्त वे कुराबड़ के पास बेमला गांव चले गये। वहां शिव-मंदिर का निर्माण कर एक बड़ा यादगार यज्ञ करवाया।

जहां दानवीर कर्ण तपा :

यहां तीन वर्ष तपाराधना कर मोहनानन्द कंथोड़ा पहाड़ी के बीच स्थित गोपेश्वर चले गये। वे जससमंद के रखेश्वर अभयारण्य में रहे। तीन माह के बाद यहां से जावर माइंस चले गये। मथुरा के पास बामणों का धाणा में भी रहे। अमरनाथ, बद्रीनारायण भी इनका तपस्या स्थल रहा।

मोहनानन्द ने द्वारिका शंकराचार्य स्वरूपानंद से ब्रह्मचर्य की दीक्षा मध्यप्रदेश के परमहंसी गंगा आश्रम में 7 मई 1964 को ग्रहण की और 25 अप्रैल 2004 को उज्जैन के कुंभ मेले में श्री 1008 स्वामी भूरारामजी महाराज दंडीस्वामी संस्थान वाराणसी के अध्यक्ष हरिस्वरानंद तीर्थ द्वारा दंडी स्वामी की दीक्षा ली। बुलंदशहर जिले के कर्णवास गांव की गंगा के राजघाट पर भी ये डेढ़ वर्ष तपे जहां दानवीर कर्ण प्रतिदिन सवा मन स्वर्ण दान करता था।

कर्णवास से कुछ भक्त उन्हें उदयपुर ले आये। यहां शास्त्री सर्कल स्थित आत्मानंदजी का आश्रम था। उनके शिष्य पर्वतगिरि के देह विसर्जन के बाद आश्रम सूना हो गया। मोहनानन्द नहीं चाहते थे कि कहीं स्थिरवास करें लेकिन भक्तों ने आश्रम की स्थिति और समस्या की ओर उनका ध्यान केंद्रित किया तो वे मजबूर हुए और आश्विन कृष्णा अमावस्या सन् 1990 को यह आश्रम संभाला।

उदयपुर में अजूबे हनुमान :

उदयपुर का यह आश्रम सौ वर्ष प्रचीन है। पूर्व में यह स्थल राजदरबार में मृत्यु प्राप्त हुओं का अर्द्ध विश्राम स्थल रहा। इस स्थल की प्रसिद्धि कालीमगरी के नाम से रही। यहां के चट्टान काले दांतावाली थी। इस कारण यह स्थल कालादांता नाम से जाना गया। आश्रम में हनुमान एक प्रस्तर के आगे-पीछे दोनों ओर उत्कीर्ण हैं। भक्त परिक्रमा कर दोनों हनुमान के दर्शन करते हैं। ऐसी प्रतिमा केवल नासिक में है। ये हनुमान खड़े हैं। इनके पास कालभैरव की बैठी प्रतिमा है। मोहनानन्द ने यहां अंबामाता और गणेश की मंदरियां बनवाईं। एक अंबामाता का मंदिर इनके द्वारा कुराबड़ के पास टोड़ी गांव की पहाड़ी की तलहटी में भी बनवाया गया। कई देव-स्थानकों का भ्रमण करते-करते दंडीस्वामी मोहनानन्द तीर्थवत ही हो गये हैं।

शंकर भक्त घंटाकर्ण :

बद्रीनाथ में घंटाकर्ण के दर्शनों ने अजीब रोमांच पैदा किया। घंटाकर्ण शंकर का बड़ा भक्त था। उसके दोनों कानों में घंटे बंधे रहते थे। एक दिन प्रात: चार बजे किसी ने किंवाड़ खटखट किये। मोहनानन्द ने एक अच्छा सा हृष्टपुष्ट कोई तीस हाथ की लम्बाई लिए घनी मूछों वाला व्यक्ति देखा तो उनकी दृष्टि उसके पांवों पर स्थिर हो गई। वह तेईस दिन तक उन्हें दर्शन देता रहा। वहीं कोई दो किलोमीटर ऊंचे उर्वशी पर्वत पर उर्वशी के दर्शन हुए जिसके सिर पर मुकुट और रंगीन परिधान चमचमा रहे थे। दिव्य स्वरूपा उस देवी का सौंदर्य कहते नहीं बनता था। वह पर्वत ही उर्वशी पर्वत के नाम से जाना जाता है। कुछ समय के लिए उन्होंने गोपेश्वर भी बसेरा किया।

देव-शेर मणि-सर्प :

पग-पग पर सर्पों का पड़ाव देखा। उन्होंने बताया कि कई देव सर्प के रूप में विचरण करते हैं। वे तनिक भी जहरीले नहीं होते। संध्या को उन्होंने एक भीमकाय सर्प और दूसरे दिन उसकी कांचली देखी। कई देवता सर्प योनि में विचरण करते हैं। वे हवाभक्षी होते हैं और मनचाहा रूप धारण करने की सामर्थ्य रखते हैं। मनुष्य रूपी घुड़ले के शरीर में आकर वे लोगों के दु:ख दर्द दूर करते हैं। हजार वर्ष की उम्र वाले सर्पों के सिर पर मणि होती है। शिकार के वक्त वे सर्प अपनी मणि एक जगह रख उसके प्रकाश में शिकार तलाशते हैं।

अखेश्वर में तो उन्हें शेर ही अधिक मिले। सर्प की तरह शेर भी देवत-रूप होते हैं। इनके दर्शन करना शुभ है। लोकप्रसिद्धि है कि पहुंची हुई शक्तियां शेर-रूप में भ्रमण करती हैं। यह शेर तो फिर भी नजर आ जाता है पर उसके ऊपर बैठा सवार देवी अथवा देव नजर नहीं आता। देवता वायु-रूप होते हैं अत: हमारी सामान्य आंखों से वे दृष्टिगत नहीं होते।

कर्णवास में मोहनानन्दजी ने तीनों काल जप-तप, पूजा-आराधना की। आश्विन शुक्ला पंचमी को सायं पांच बजे उन्हें एक दिन एक पुरूष दिखाई दिया जिसे वे भूत ही अधिक समझ बैठे। कुछ ही देर बाद उसके साथ एक महिला दिखाई दी। पुरूष की बैठणी चार फीट की थी जबकि स्त्री का कद ठिंगना था। पुरूष धोती पहने, सिर पर चोटी, तथा नाखून दो इंच बड़े थे। मोहनानन्द गायत्री के जाप में लीन थे।

अचानचक उनका ध्यान टूटा। लगा वे शिव-पार्वती हैं। यदि उन्हें सर्प-दर्शन भी हो गये तो वे मान बैठेंगे कि दोनों शिव-पार्वती थे। वे उठे तब ही उन्हें एक बड़ा मोटा सर्प दिखाई दिया जो उनके पांवों को स्पर्श देता निकल गया।

चित्तौड़ की मोहर मगरी का मजदूर :

बद्रीनारायण में पत्नी-बिछोह से क्लान्त मोहनानन्द का मन शान्त हुआ। रात्रि को जब वे चट्टान पर सोये हुए थे तब एक साधु भी वहां आकर सो गया।

-शेष पृष्ठ सात पर

कामड़ों में प्रचलित सत्संगी भजन

-डॉ. चम्पादास कामड़-

कामड़ सन्त अपने को जन्मत: संन्यासी मानते हैं। युवा होने पर भेख अथवा भगवां वस्त्र धारण कर संत-गोष्ठी-सत्संग में आना जाना प्रारम्भ कर देते हैं। सत्संग से तात्पर्य संतों, सज्जनों तथा सुधर्मी लोगों की संगति करना और उनके समागम में अपनी संगति देना है।

इस सत्संग-संगति में जो भजन गाये जाते हैं वे आत्म-परमात्म से जुड़े ज्ञान की सीख के साथ जीव को सुपथगामी बनाने, सत्कर्म करने, दुष्कर्म को धिक्कारने की प्रवृत्ति लिए होते हैं। पहुंचे हुए संतों, महंतों, ज्ञानीजनों तथा पराशक्ति पहचानों द्वारा लिखित भजनों में विविध रूपा लौकिक-पारलौकिक दृश्य-अदृश्य जगत की जानकारी तथा जीव विज्ञान की मनोदशा के अनूठे रूपों की जानकारी चकित कर उत्तुंग उत्सुकता जगाती है।

सत्संगी भजनों में गोरखनाथ से लेकर कबीर, सूरदास, कमाली, मीरां, जीवाराम, लिखमा माली, कमल, वनानाथ, कनीराम गुर्जर, इहदेव, दूदाराम, मानस्वामी, बुदाराम, रामधन हंस, मोतीराम, सिमरथ, आशा भारती, कल्याण भारती, बोधानंद, मदनानंद, निगमानंद, प्रेमानंद, ज्ञानानंद तक के अनेक सिद्धों, भक्तों, संतों की वाणियां मिलती हैं।

कई भजनों में कर्म के अनुसार फल प्राप्ति, पूर्वजन्म में किये कर्मानुसार इस जन्म में उनका भोग-भुगतान, दुख-सुख के बंधन तथा भावी समय की भाखणी की हुई मिलती है।

एक भजन में श्रीकृष्ण ने पांडवों को कलियुग का जो हल बताया उसे सहदेव ने कहा है जिसका सार है- कलियुग बड़ा ही

प्रलयंकारी रूप लिये आयेगा। पांचों पांडव, कुंती तथा द्रोपदी हिमालय जाकर गलेंगे, अपने पापों से मुक्त होंगे। ये अभी भी यदा-कदा हिम मानव के रूप में दृष्टिगत होते हैं किन्तु मनुष्य की निगाह पड़ते ही अदृश्य हो जाते हैं।

कलियुग में लोगों की उम्र घट जायेगी। लोग ज्ञान विहीन होंगे जिन्हें अपने-पराये का भान तक नहीं रहेगा। भोग इतना हावी होगा कि कुंवारी कन्या तक उससे अछूती नहीं रहेगी। रिश्तेदार, गोतीभाई या कि खून के रिश्ते वाले आपस में मिल एक-दूसरे का खून करने को उद्यत होंगे। नारी अपने पति से विमुख हो विकट परिस्थिति प्राप्त करेगी। दूसरे की शक्ल के, वंश के पातक पुत्र उत्पन्न होंगे। भजन पंक्ति है-

केई गया किसन मुरारी
पांडवां कलजुग आवेळा गणो भारी।।
कानां नी हुणी, नजर्यां नी देखी ने पांडवां बात विचारी।
माता कुंतां सती द्रोपदां हाड़ हिमाळै गाली। पांडवां----
ओछी उमर अकल रा हीणा, कन्या नी छोड़े कुंवारी
वांरा बायोड़ा बीज बायरनी आवे, कर-कर श्वांसा हारी।। पांडवां--

इसी प्रकार षट् दर्शन चेती करेगा। राजा-महाराजा भिखारीवत होंगे। यति संन्यासी विरले मिलेंगे। सांसारिक लोग नियमों को दूर किनार कर देंगे। वेद पुराण गीता पढ़ने वाले कोईक ही मिलेंगे।

कानोड़वासियों का उदयपुर में ऐतिहासिक प्रदर्शन

-200 कारों, 8 बसों में की धुंआधार रैली-

-मुख्यमंत्री के नाम दिया जिला कलेक्टर को ज्ञापन-

उदयपुर। कानोड़ को तहसील बनाने की मांग को लेकर गुरूवार को कानोड़ से 200 से अधिक वाहनों का काफिला रैली के रूप में उदयपुर पहुंचा। लगभग 500 महिलाओं सहित 2000 आन्दोलनकारियों ने जिला कलेक्ट्री पर आधे घंटे तक नारेबाजी के साथ जमकर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में पुरूषों के साथ महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे।

ग्यारह सदस्यीय आंदोलनकारियों ने जिला कलेक्टर रोहित गुप्ता को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया। इनमें नगर पालिका अध्यक्ष अनिल शर्मा, उपाध्यक्ष दर्शन शर्मा, पार्षद भवानीसिंह चौहान, बजरंगदास वैष्णव, कोमल चौधरी, संघर्ष समिति संरक्षक अनिल भानावत, कानोड़ राजघराने के राव योगेश्वरसिंह सारंगदेवोत, तुलसी अमृत निकेतन के संचालक शांतिचन्द्र बाबेल, स्थानीय प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत, पूर्व उपाध्यक्ष मनोज भानावत तथा जनता सेना नगर अध्यक्ष रतनलाल लक्षकार थे।

यहीं संघर्ष समिति के सदस्य दिनेश जोशी ने कहा कि यह आन्दोलन अब थमने वाला नहीं है। हम कानोड़ को तहसील बना कर रहेंगे चाहे इसके लिए हमें अपने प्राणों की आहूति ही क्यों न देनी पड़े। तहसील के लिए कानोड़ का बच्चा-बच्चा कुर्बान होने को तैयार है। प्रेमशंकर कोजावत ने कहा कि कानोड़ के साथ जो विश्वासघात हुआ है उसका बदला लेकर रहेंगे। चान्द खां ने कानोड़ के साथ हुए सौतेले व्यवहार की याद दिलाई और विधायक रणधीरसिंह भीण्डर पर तंज कसते हुए कहा कि हम प्यार से आंख मिलाने का हुनर भी जानते हैं तो आंख से नफरत निकालना भी जानते हैं।

ठिकाने के राव योगेश्वरसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि रियासतकाल में कानोड़ तहसील हुआ करती थी और जिला सराड़ा था लेकिन रियासतों के एकीकरण के बाद कानोड़ को तहसील का दर्जा समाप्त कर दिया गया। पिछले तीस वर्षों में कई बार उग्र आन्दोलन हुए। पुलिस में मुकदमें भी दर्ज हुए। जब कानोड़ नगर पालिका के 15 से 15 वार्डों में भाजपा का परचम लहराया था तब भी इस मांग ने जोर पकड़ा था और 15 ही पार्षदों ने सरकार को अपने इस्तीफे सौंप दिये थे।

कानोड़ मित्र मंडल के संस्थापक डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि कानोड़ के इतिहास में ही नहीं बल्कि कानोड़वासियों द्वारा उदयपुर में ऐसे जन आंदोलन का जलवा पहले कभी नहीं देखा गया जिसमें हर बच्चे, महिला तथा पुरुष ने बुलन्दगी के साथ तहसील खोलने का जौहर दिखाया। उन्होंने मित्र मंडल के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस अभियान में उन्मुक्त सहयोग दिया।

इससे पूर्व वाहन रैली प्रात: 11 बजे कानोड़ से रवाना हुई जो बड़वई, भींडर, बांसड़ा, खैरोदा, भटेवर, डबोक, देबारी होते हुए दोपहर 2 बजे प्रतापनगर चौराहे पहुंची। यहां से रैली ठोकर चौराहा, कुम्हारों का भट्टा, दुर्गा नर्सरी, अशोक नगर, शास्त्री सर्कल, देहलीगेट होती हुई निगम प्रांगण में पहुंची। रैली के साथ पुलिस जाब्ते सहित महिला कमाण्डो भी चल रही थी।

यहां से सभी कतारबद्ध होकर पैदलमार्च करते हुए सूरजपोल, बापू बाजार, देहलीगेट होते हुए कलेक्ट्री पहुंचे। रैली के दौरान महिला-पुरूषों ने हाथों में कानोड़ को तहसील बनाने सम्बन्धी नारे लिखी तख्तियां थी। कलेक्ट्री पहुंचते ही सभी ने 'हम हमारा अधिकार मांगते / नहीं किसी से भीख मांगते।' 'यह तो पहली झांकी है / जयपुर दिल्ली बाकी है जैसे नारों से पूरे कलेक्ट्री को गूंजा दिया।

रैली में मुख्य रूप से नगर पालिका अध्यक्ष अनिल शर्मा, उपाध्यक्ष दर्शन शर्मा, पार्षद भवानीसिंह चौहान, बजरंगदास वैष्णव, कोमल चौधरी, संघर्ष समिति संरक्षक अनिल भानावत, कानोड़ राजघराने के राव योगेश्वरसिंह सारंगदेवोत, तुलसी अमृत निकेतन के संचालक शांतिचन्द्र बाबेल, स्थानीय प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत, पूर्व उपाध्यक्ष मनोज भानावत, जनता सेना नगर अध्यक्ष रतनलाल लक्षकार, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष सुशीला टेलर, पूर्व रंजना बाबेल, पूर्व पार्षद राजकुमारी कामरिया, जनता सेना पार्षद कोमल कामरिया, जनता सेना के कार्यकर्ता फिरोज भाटी, नगर यूथ कांग्रेस अध्यक्ष दिलीप सोलंकी, भाजपा मण्डल अध्यक्ष महावीर दक, दिनेश जोशी, भजनलाल श्रीमाली, पार्षद सरोज व्यास, आशा जोशी, वरजूबाई मीणा, बंशीलाल जारोली, शशिकला शर्मा, इन्द्रा जैन, सुभाष रांका, ख्यालिलाल बाबेल, गिरिजा शंकर व्यास बॉस, मणिशंकर व्यास, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, भगवतीलाल पुष्करणा, परसराम सोनी, शांतिलाल धींग, सुन्दरलाल जैन, जयप्रकाश व्यास, राजेन्द्र जैन, दिलीप बाबेल, लोकेश मल्हारा, लोकेश बाबेल, अशोक उपाध्याय आदि मौजूद थे।

धूमधाम से मनाई महावीर जयंती

उदयपुर। 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। श्री महावीर जैन परिषद ने शहर में शोभायात्रा निकाली। इसमें भगवान महावीर के जीवन से जुड़ी झांकियों के अलावा पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ भारत अभियान, भ्रूण हत्या रोकथाम, बेटी पढ़ाओ, डिजिटल इंडिया जैसी कई झांकियां आकर्षण का केंद्र रहीं।

विविध जयकारे :

शोभायात्रा का शुभारंभ टाउनहॉल परिसर से जिन पताका फहराने के साथ हुआ। पताका फहराते ही त्रिशलानंदन वीर की जय बोलो महावीर की..., महावीर ने क्या दिया-अहिंसा का संदेश दिया... जैसे

जयघोष गूंजने लगे। जैन जागृति सेंटर महिला प्रकोष्ठ ने ध्वज गान और राष्ट्रगान गाया। शोभायात्रा में सबसे आगे खुली जीप में आठ जिन पताका लहरा रही थीं। धवल वस्त्र और गुलाबी रंग के जैनम लिखे उपरणा में सजे सैकड़ों युवा दुपहिया वाहनों पर झंडा ऊंचा रहे हमारा, जैन धर्म का बजे नगाड़ा..., जब तक सूरज चांद रहेगा महावीर तेरा नाम रहेगा..., जैसे जोशीले अंदाज में जयघोष लगाते हुए चल रहे थे। शोभायात्रा में डिजिटल इंडिया की झांकी में महिलाएं ऑनलाइन हो जाइए, भ्रष्टाचार भगाइए.... के नारे लगा रही थीं।

शोभायात्रा के ठाठ :

शोभायात्रा बापू बाजार, देहलीगेट, भूपालवाड़ी, भड़भूजा घाटी, बड़ा बाजार, घंटाघर, हाथीपोल, अश्विनी बाजार होती हुई पुन: नगर निगम प्रांगण पहुंची। शोभायात्रा में बीसा हुमड़ दिगंबर जैन सुविधि जैन मित्र मंडल, दिगंबर जैन चित्तौड़ा महिला मंडल, समता युवा संघ, स्थानकवासी जैन श्राविका संघ, जैनाचार्य देवेंद्र महिला मंडल, तेरापंथ महिला मंडल, परमेष्ठी नवकार ग्रुप, जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक जिनालय संघ, वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शांतिनाथ दिगंबर जैन महिला मंडल, दिगंबर जैन महिला मंच खंडेलवाल, जैन महिला प्रगति मंच, तेरापंथ युवक मंडल, जैन सोश्यल ग्रुप लेकसिटी, कुंथु मति महिला मंच, बड़ीसादड़ी जैन मित्र मंडल आदि संगठनों के सैकड़ों लोग शामिल हुए।

महावीर के पांच नाम :

शोभायात्रा के बाद धर्मसभा दिगंबर मुनि डॉ. प्रणामसागर ने कहा कि महात्मा गांधी ने महावीर स्वामी के आदर्शों को अपनाया तो उन्हें आज नोटों पर छापा जाता है। महावीर के पांच नाम थे। इनमें पहला नाम वर्धमान था जिसका मतलब जैन समाज में कभी पैसों की कमी नहीं रहे। इसी का नतीजा है कि जैन समाज के किसी-भी व्यक्ति को भीख मांगते नहीं देखा होगा। दूसरा नाम सन्मति यानी अच्छी मति था जो संतों के पास जाने और महामंत्र सुनने के लिए प्रेरित करती है। तीसरा नाम वीर। वीर शरीर से कमजोर हो सकता है, लेकिन आत्मा से कभी-भी कमजोर नहीं होता है। चौथा नाम अतिवीर यानी आयंबिल जो उपवास, वर्षीतप आदि तपस्या करने का प्रतीक है। पांचवां नाम मिला महावीर स्वामी, जो अपरिग्रह के मार्ग पर चलते रहते हुए कल्याण का संदेश देता है।

पीएमसीएच में निशुल्क सोजतिया दवाबैंक शुरू

उदयपुर। उदयपुर में अब किसी भी गरीब को इलाज की दवा के लिए इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं है। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल भीलों का बेदला में सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से निशुल्क महेश सोजतिया दवा बैंक की शुरूआत की गयी है। इसमें जरूरतमंदों को लाईफ सेविंग मेडिसिन निशुल्क उपलब्ध करवायी जायेगी।

इस निशुल्क दवा बैंक का उद्घाटन पीएमसीएच के चैयरमैन राहुल अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. पी. अग्रवाल, पेसिफिक यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार शरद कोठारी, सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रो. रणजीतसिंह सोजतिया, डॉ. महेन्द्र सोजतिया, रीना सोजतिया, अनिता सोजतिया ने किया। इस अवसर पर हॉस्पीटल के मेडीकल अधीक्षक डॉ.आर. के. सिंह सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। चैयरमैन राहुल अग्रवाल ने कहा कि उदयपुर शहर और आसपास के क्षेत्र और संभाग के कई सारे मरीज अपना इलाज करवाने पेसिफिक हॉस्पीटल आते हैं इसमें से कुछ गरीब होते हैं जो मंहगी दवाइयों का खर्चा नहीं उठा पाते हैं। ऐसे में मरीज को बड़ा नुकसान हो जाता है। कई बार एक्सीडेंट हो जाने या बड़ी बीमारी का पता चलने पर मंहगी दवाएं खरीदनी होती हैं लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण इलाज नहीं करवा पाते हैं। इन बातों को ध्यान में रखकर पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल में महेश सोजतिया निशुल्क दवा बैंक की शुरूआत अच्छी पहल है।

सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट के रणजीतसिंह सोजतिया एवं डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट सामाजिक कार्य और सेवा के लिए कटिबद्ध है। इसी क्रम में गरीबों की सहायता के लिए दवा बैंक की स्थापना कर लाईफ सेविंग और इमेरजेंसी मेडिसिन दी जायेगी। गंभीर रोगों यथा हार्ट अटैक, ब्रेन स्ट्रोक, लकवा, कैंसर का इलाज समाज का निम्न आर्थिक वर्ग भी अब करवा पाएगा। पेसिफिक के उच्च स्तरीय इलाज में यह दवा बैंक पूरक का कार्य करेगा।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 अप्रेल 2017

सम्पादकीय

लोकतंत्र और राजसत्ता

लोकतंत्र और राजसत्ता एक बहती हुई नदी की धार की तरह है। नदी का बहाव लोकतंत्र है जबकि उसके रक्षक दोनों किनारे राजसत्ता के प्रतीक कहे जा सकते हैं। नदी स्वच्छन्द बहती रहती है। वह अपने किनारों पर भी अपनी निगाहें रखे रहती है। अपने बहाव के अनुसार नदी किनारों का रखरखाव सन्तुलित किये रखती है। नदी का सिकुड़ना और बढ़ना किनारों को हर समय प्रभावित करता है। नदी जानती है कि उसका तंत्र स्वस्थ है कि अस्वस्थ हुआ जा रहा है। उसका सुधरना और बिगड़ना नदी के ही आश्रित है। यदि रूठ गई तो अनर्थ भी कर देती है।

इस आधार पर यदि हम आज के लोकतंत्र को देखें तो ठीक से विश्लेषण कर सकते हैं। नदी का बहाव जनमेदिनी है। दिल्ली वही है। उसकी जनता भी वही है जिसने अरविन्द केजरीवाल को अचानक जीत दिलाकर सोने का मुकुट पहना दिया और पिछले दिनों हुए चुनाव में उसी जनसत्ता ने केजरीवाल के पांवों से जूते तक उतरवा लिये।

जनता यूं तो राजकाज के मामले में दखल नहीं करती किन्तु वह गूंगी-बहरी बनकर चुप भी नहीं बैठी रहती है। हर समय हरकत करती नहीं लगती पर उसे हर हवा के झोंके का एहसास बना रहता है। वह जान गई कि जो जन बारह रूपये खर्च कर भी अपना पेट नहीं भर सकता, केजरीवाल ने वैसे ही पेट के लिए बारह हजार की थाली सुलभ करा कर जनता की गाढ़ी कमाई स्वाहा कर दी।

जनता जन-जन की परख रखती है। वह दाईमां है। सबका पेट जानती है। उसने नरेन्द्र मोदी को सर्वोच्च सत्ता की कमान सौंप दी तब अच्छे-अच्छे शूरवीर तीस मारखां की मूंछों के बाल गिरते नजर आये। अधिक समय नहीं हुआ। देश के हृदय कहे जाने वाले उत्तरप्रदेश के चुनाव की एटलस हमने देखी है। अच्छे-अच्छे मायावियों को दरकिनार कर अचानक योगी आदित्यनाथ का चिमटा चल निकला तो ऐसा कि कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था।

लोगों ने कृत्रिम डूंजवायरा छोड़ जनता को येन केन प्रकारेण गुमराह किया पर लोक समझ गया, उसने अपने तंत्र को अपने पंजों में लुकाये रखा और मौका देख अच्छों-बड़ों को पटकनी दे धूलचट्टा कर दिया। अच्छाई की दानावल जब फैलती है तो उसका असर अलग ढंग से अपना दबदबा दिखाता है और आसपास ही नहीं, दूरदराज तक को खुशनुमा बनाता है। अभी मोदी लहर चल रही है। उसमें योगी लहर जुड़ी है जैसे समुद्र से बड़ी नदी जुड़ती है।

पत्र-पिटारी

15 दिसम्बर का 'शब्द रंजन' मिला, आभार! प्रत्येक अंक इतना लुभावना होता है कि अक्षरश: पढ़ता ही हूं। **-अम्बू शर्मा, कोलकाता**

15 मार्च के 'शब्द रंजन' में 'बालजन्म पर सुभागपड़ों का अंकन' लेख ने अनेक प्रान्तों से लुप्त हुई, लुप्त होती जा रही मंगल संदेश भेजने की परम्परा की याद ताजा कर दी। बहुत अच्छा लगा। संदेश भेजने की यह परम्परा निराली और विविध अर्थ पूर्ण है। पूर्वी उत्तरप्रदेश, अवधी और भोजपुरी क्षेत्र में दादी के लिए सुन्दर वस्त्र पर चन्दन से अंकित कर शिशु के 'चंदन पांव' भेजे जाते हैं।

ब्रज में यह बालजन्म का शुभ संदेश कुम्कुम् से चावल रंग कर भेजा जाता है और इसे 'तिल चामटी' कहते हैं। यह नाई ले जाता है। देश के विभिन्न प्रान्तों में भी जब तार, टेलीफोन यहां तक कि पत्र लिखना भी लोगों को, सभी को नहीं आता था अवश्य ऐसे मांगलिक रूप रहे होंगे। ब्रज के एक गीत में यह संदेश देने अटारी पर चढ़कर ढोल बजाने का उल्लेख भी आता है। महत्वपूर्ण है बालजन्म के हर्ष में सामाजिकता की यह परम्परा पर अब सब यांत्रिक है।

-डॉ. मालती शर्मा, पूना

'शब्द रंजन' नियमित प्राप्त हो रहा है। लोकजीवन, संस्कृति एवं साहित्य निश्चय ही कौतुहल, जिज्ञासा और शोध का विषय है। इस क्षेत्र में डॉ. महेन्द्र भानावत का शोध, लेखन, चिन्तन राष्ट्रस्तरीय ही नहीं, विश्वस्तरीय है। 'शब्द रंजन' के माध्यम से भानावतजी सहित देश-विदेश के अन्य विशेषज्ञों की रचनाओं से रू-ब-रू होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। यह विशाल क्षेत्र है जिससे हमें ही नहीं, हमारी आने वाली पीढ़ी को भी अवगत होना आवश्यक है ताकि संस्कृति, संस्कार, परम्पराएं सुरक्षित रह सकें। छोटा सा किन्तु महत्वपूर्ण सुझाव देने का दुस्साहस कर रहा हूं। मेरा विनम्र आग्रह है कि यदि इसे मासिक रूप में प्रकाशित किया जाय तो यह अधिक उपयोगी एवं संग्रहणीय हो सकता है। अखबार को ज्यादा सुरक्षित व संग्रहीत नहीं किया जा सकता। उदयपुर आऊंगा तब अवश्य भेंट करूंगा। **-राजकुमार जैन 'राजन' आकोला**

पोथीखाना

जीत रो सेवरो

श्री माणक तुलसीराम गौड़ लिखित 'जीत रो सेवरो' एक प्रादेशिक, आंचलिक, चरित्र प्रधान, प्रसादगुणयुक्त शैली में लिखा गया अकूत सतोगुणी श्रम, साधना और समर्पण के युग प्रेरक भाव का उपन्यास है।

इस उपन्यास में चौपाल की बात है। घर के सारे धंधे चतुराई से करने की ललक है। परिवार को पालने की जुझारू क्षमता है। विद्या देने-लेने तथा समर्पण की हूंस है। साथ ही परिवार और घर को नेम नियम से पालने की अकूत क्षमता है।

उपन्यास पढ़ने से पता चलता है कि श्री गौड़ ने बड़ी सावधानी से आपसी सम्बन्धों को निभाने की कुशलतापूर्वक सारी विधियां अपनाई हैं। इसमें पुरानी कथा-शैली और नवीन चातुर्य को मुश्किल प्रसंगों में भी सर्वथा अनुरूप शब्दों के प्रयोग से ग्रामीण परिवेश की अदब आबरू और नगरीय जीवन की सहजता को बड़ी ही ईमानदारी से उकेरा है। सूरज बाबे से सात दिनों की सायर का यह संवाद द्रष्टव्य है-

'टुळक-टुळक देखती-देखती वा सूरज बाबै कांनी देखण लागगी। आंख्यां मिचमिचिजै तो ई सूरज ने देखण री पूरी आफळ करै। सूरज बाबो ई जाणै सायर नै देखै-भाळै अर निरखै। इयांन लागै जाणै सूरज बाबो सायर कैवे है के म्हैं तो तपूं ईज हूं अर छोटी, थनै ई तपणो पड़सी।

म्हैं दिन-रात बिनां विसुणी खायां बैंवतो रैऊं हूं अर थारै मांय ई म्हारी गत होसी। तपण रो तप तो म्हारै मांय है अर थनै इण तपण री ताकत म्हैं देस्यूं। इतरै मांय सायर मन मांय मुळकी। होठां माथै मुळक चडूड़ दीख रैयी है। जाणै वा कैवे है के म्हनै मंजूर है।'

इस उपन्यास में लेखक ने भले ही बेटी की विदाई को विस्तार नहीं दिया किन्तु थोड़े से शब्दों में जो मर्म की बात कही वह उल्लेखनीय है- 'सायर ई कोयलड़ी, कूकड़लो अर सीखड़ली गवाय र आपरै बाबोसा सूं विदा लेय र उणांरी आंख्यां गीली कराय र आपरै सासरियै चिमटासरी आयगी।'

लेखक ने राजस्थान के गांवों, नगरों में यथा अवसर कही जाने वाली कहावतों, दूहों, सरस उक्तियों तथा दो लड़ी शब्दों का बड़ी सुन्दरता से उपयोग किया है-

बेळयां रा बायोड़ा मोती नीपजै / आम फळै नीचो नवै, अरंड आकासां जाय / लाज बिन नार, चरित्र बिन मोट्यार किण काम रा / सवार पड़-पड़ नै ई त्यार होवै अर भाटो गुड़-गुड़ नै इज गोळ होवै है / मत मरज्यो मायड़ बाळक री अर मत मरज्यो बूढ़ै री नार / आंधै नै तो लकड़ी रो सहारो ई घणो / बारह बरसां पछै घूरै रा ई दि फिरै।

इसी तरह स्थान-स्थान पर उल्लेखित दोहे-सोरठे उपन्यास की शोभा में वृद्धि करते हैं। शब्दों का प्रयोग ग्राम्य जीवन के अंतस का दरसाव देते हैं। यथा- घरां-खेतां, सगाई-ब्याव, हारी-दुखारी, सुख-दुख, लाड़-कोड़, आव-आदर आदि। उपन्यास का अन्त अत्यंत सराहने योग्य है जिसमें कहा गया है- 'इण सेवरा रो हकदार म्हैं नीं हूं, बल्कै म्हारी मा सायर देवी है। --- नारी संघर्ष री--- जै।' आशा है, उपन्यास का सब ओर स्वागत होगा।

-दीनदयाल ओझा

बुन्देली को समर्पित 'बुन्देली बसन्त'

बुन्देली भाषा के सर्वांगीण प्रकाश और विकास के लिए अहर्निश साधनाशील बने डॉ. बहादुरसिंह परमार छतरपुर से विगत डेढ़ दशक से 'बुन्देली बसन्त' नामक वार्षिक पत्रिका का उल्लेखनीय प्रकाशन कर रहे हैं।

इसके माध्यम से बुन्देली भाषा, उसके साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, पुरातत्व तथा जीवनदर्शन के अनेकानेक उन रूपों को प्रकाश में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं जो अब तक अज्ञात तथा अल्पज्ञात रहे हैं। बुन्दली धरा पर यत्र-तत्र बिखरी अव्यवस्थित साहित्यिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर तथा उसके सहेजने, संरक्षित करने तथा रखरखाव का जिस रूप में जो भी विद्वान, विचारक, गायक, नर्तक, कलाकार मूल्यवान कार्य कर रहे हैं, उसकी जानकारीपरक आलेखों का प्रकाशन कर बुन्देली-समृद्ध-सम्पदा का भगीरथ भण्डार भरने का जो बीड़ा वे

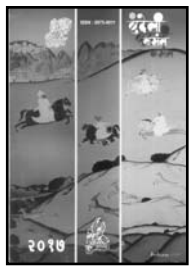

उठाये हुए हैं वह सर्वप्रकारेण अभिनंदनीय है।

इस परम्परा में प्रतिवर्ष आयोजित बुन्देली उत्सव एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसमें कई विभूतियों का गौरवपूर्ण सम्मान किया जाता है। इससे बहुत सारे कला-रूपों को जहां संरक्षण मिला वहां युवक-युवतियों ने यह प्रेरणा भी ग्रहण की कि अपनी परम्पराओं के श्रेष्ठत्व को बचाकर ही हम आधुनिकता को सुन्दरतम स्वरूप दे सकते हैं।

प्रस्तुत 18वें अंक में भाषा साहित्य और आलोचना खण्ड में 23, इतिहास परम्परा और संस्कृति खण्ड में 21, बुन्देली गद्य खण्ड में 20 तथा बुन्देली काव्य खण्ड में 33 रचनाएं संकलित हैं। इस हेतु बुन्देली विकास संस्थान का योगदान उल्लेखनीय है। इन सभी कार्यों, प्रयासों और उपलब्धियों के संरक्षक शंकर प्रतापसिंह बुन्देला 'मुन्नाराजा' का सदाबहार संरक्षण प्राप्त है। मुन्नाराजा का प्रभाव और उनकी जन लोकप्रियता का ही यह आलम है कि इन सारी प्रवृत्तियों के पीछे छतरपुर के राजमहल परिवार का प्रशासनिक और प्रबंधतंत्रीय सहयोग, जो आजादी से पूर्व काल में भी सुलभ रहा, आजादी बाद और अधिक मुक्त उन्मुक्त तथा सर्वयुक्त हो गया है।

- डॉ. कहानी भानावत

न्यायायिक अधिकारों एवं कार्यप्रणाली पर मंथन

उदयपुर। द इण्डियन लॉ इंस्टीट्यूट राजस्थान चेप्टर द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ होटल गोल्डन टूलिप में उच्चतम न्यायालय के

न्यायाधीश अरूण मिश्रा के मुख्य आतिथ्य में हुआ। अध्यक्षता राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश प्रदीप नन्द्राजोग ने की जबकि विशिष्ट अतिथि राजस्थान सरकार के एडवोकेट जनरल नरपतमल लोढ़ा रहे।

मुख्य अतिथि श्री मिश्रा ने न्यायाधीशों एवं अधिवक्ताओं से कहा कि प्रत्येक जरूरतमंद फरियादी को समय पर न्याय दिलाना हमारा प्रमुख कर्तव्य है। हमें हमारी शक्तियों का उचित प्रयोग करते हुए न्याय व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने मौजूद प्रतिभागियों से कहा कि फीस प्राप्त करना अधिवक्ता का अधिकारी है तो फरियादी के प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करना प्रमुख दायित्व है।

प्रदीप नन्द्राजोग ने न्याय को प्राथमिकता देते हुए पारदर्शिता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने की बात कही। उन्होंने कहा कि एक अधिवक्ता को न्यायाधीश से अधिक दिमाग रखना होता है क्योकि अधिवक्ता को समाज में समान न्याय स्थापित करने में भी सहयोग करना होता है। उन्होंने बताया कि कोर्ट में मामलों के लम्बित रहने का मुख्य कारण बार-बार स्थगन लेना है। ऐसे में बार व बेंच को आपसी समन्वय से कार्य करते हुए प्रभावी प्रयास करने की आवश्यकता है जिससे मामलों का त्वरित निस्तारण हो सके।

नरपतमल लोढ़ा ने न्यायिक कार्यों को सरकार की सहायता से और अधिक मजबूत बनाने पर जोर दिया और कहा कि हमें लोक अदालतों को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है जिससे फरियादी के प्रकरणों का आपसी समझौते से समयबद्ध निराकरण हो। द इण्डिन लॉ इंस्टीट्यूट राजस्थान चेप्टर के कार्यकारी अध्यक्ष गोविन्द माथुर ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. एकलव्य अ. भंसाली ने किया।

कार्यशाला में विभिन्न विधिवेताओं द्वारा अनुकल्पी विवाद निपटारा मंच के तहत स्वतंत्र, कम खर्चीली व जल्द न्याय की प्रक्रिया के संबंध में परस्पर महत्वपूर्ण चर्चाएं एवं विचार-विमर्श किया गया। कार्यशाला में राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति, वरिष्ठ अधिवक्तागण, न्यायिक अधिकारीगण, अधिवक्तागण, एकेडमिशियन्स व प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे।

HIGH-END LUXURY APPARTMENTS

ARCHI
Platinum
Proud to be here...

SUKHADIA CIRCLE

ARCHI
PARADISE
Luxury Living

100 FT. ROAD, SOBHAGPURA

NEW VIDHYA NAGAR, SECTOR - 3

ARCHI
PEACE PARK
feel the peace

OPP. CA BHAWAN, SECTOR 14

ARCHI
SOLITAIRE
Apartment with luxury

ARCHI GROUP OF BUILDERS

Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards DPS, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Ph.: +91-98290 22203, +91-97848 28555, Email: himanshu@archigroup.in • Web: archigroup.in

खोज-खबर

ख्याल लेखक तथा खिलाड़ी

रामगढ़ के उमरदीन इलाही नारु रोग के कारण पिछले छह माह से बिस्तर पकड़े हैं। दोनों पांवों में नारु ने उठने तक की हालत नहीं रखी है। 23 नवम्बर 1968 को उनसे भेंट की। चिड़ावी ख्यालों के शीर्ष खिलाड़ी नानू राणा के पोते लादू के साथ कई खेलों में भाग लिया। ये जनाना बनते। लादू की अच्छी मण्डली थी। विभाजन के बाद लादू के पाकिस्तान चले जाने से मण्डली टूट गई। चिड़ावा का केदारिया तथा उसका पुत्र विलास डाकोत अच्छे खिलाड़ी थे। नानू के लिखे जगदेव कंकाली, हीर रांझा, पूरणमल, ढोला मरवण, विराट पर्व, चकवा बैण, बीन बादशाह शहजादी, सौदागर वजीर खेल करते थे। दूला राणा की मण्डली है। एक मण्डली जाखल के भेरा राणा की है।

उजीरा तेली की मण्डली भी चिड़ावा शैली के खेल करती है पर उसमें शायरी अधिक है। नानू हिन्दू संस्कृति, वेद, पुराण पर अधिक ध्यान देते। दोनों घनश्यामदास के चेले होने से गुरु भाई थे। घनश्याम चिड़ावा के ब्राह्मण घराने से थे। यहीं के गोविन्दराम दर्जी अच्छे नचैया थे। नानू ने इन्हें गुरु बनाकर नाच सीखा। चिड़ावी खेल कवित्त, शेर, दूहा, झाड़, लावणी, झेला, दुबाला, सवैया में गाये जाते हैं। उजीरा लिखित नरसी का भात, सुलतान का भात, मालदे हाड़ी रानी, वीरमदे सोनगरा, अमरसिंह, बदर मुकुट ख्याल अधिक चले।

सर्वप्रथम झालीराम नागोरी रंगत के डेड़िया दूहे लाये। उमरदीन ने कई राग रागनियां गाकर सुनाईं। साजों में ढोलक, सारंगी, पेटी-हारमोनियम बजाये जाते। तख्तों के मंच पर बेपर्दे खेल होते। हर कलाकार घुघरे पहनता। यहां के सत्यनारायण सर्राफ के पास ख्यालों की छपी, अनछपी हजार-बारह सौ पुस्तकें-पाण्डुलिपियां हैं।

नानू राणा ने 60 के करीब ख्याल लिखे। कटरुलाल उत्तार, ठा. गजाधरसिंह वर्मा, जालीराम, प्रहलादीराम, मोतीलाल, तेजकवि, धन्नालाल, नत्थाराम शर्मा, लच्छीराम, उजीरा तेली, वजीरा तेली, बंशीधर शर्मा, पं. पूनमचंद सिखवाल, पं. जयदयालु वर्मा, बालमुकन्द, जगदम्बालाल, रामरतन दरक, पं. सूरजमल, पं. माईराम शर्मा 'कविरत्न', खूबीराम शर्मा, पं. रंगीलाल, रामनारायण कायस्थ, लक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव, बंशीलाल शर्मा, कालीचरण-अन्तराम, बंशीलाल कोस्तु, श्रीकृष्ण पहलवान, मोहनलाल, चन्द्रलाल भाट, धनाधन्न, चुन्नीलाल, ब्रह्मभट्ट कवि अम्बालाल, मोहनलाल, शिवदयाल लक्षकार, चिरंजीलाल पारासुर, प्रियादास शुक्ल, पुरोहित रामसिंह, शिवराम शर्मा, वृन्दावनदास, बांकेबिहारी, पं. किशनलाल, कवि छाजूलाल, पं. चन्द्रशेखर गौड़, पं. महाराज दीन दीक्षित, खत्री भीखमचन्द, सदासुख, कुं. श्यामस्वरूप जोशी, शेषदास, लच्छीराम खोजी, शिवराम जावरा, रामनारायण कायस्थ, मोहन शर्मा, शाह शमसुद्दीन, पं. दधिमतदास शर्मा, डिंगल कवि लख्मीदत्त बारहठ, जोतगी भेरुबगस, गोकलचंद ओझा, वैद्य पुष्पापुरी गोस्वामी, पुरोहित भानीराम, मुंशी शीशराम, सिद्धेश्वर उस्ताद, साधुराम सुगनचंद धर्ड, जेसराज-जीवनराम, सुगनचंद अग्रवाल, अणुतराम पुरोहित, रामगोपाल व्यास, सागरमल जोतगी, पं. लखमीचंद, चोबसिंह-हरप्रसाद, ऊमरा, चुन्नीलाल गोतम, भूधर मिसर, मा. भीमराज 'आजाद रंगीले', खाती रतना, अगरवाला डालू, अंबादत्त, लछिमन, नाथूलाल, घनश्यामदास, न्यादरसिंह बेचैन, विप्रझाल, सोनी हीरानंद, जोशी मोहनलाल, फतेचंद, कल्याणराय जोशी, मंगलदास नामक कई ख्याल लेखक हुए हैं। इनमें से कई अच्छे खिलाड़ी थे जिनकी नामी मंडलियां थीं।

तुर्राकलंगी ख्यालों पर अध्ययन के दौरान भी मैंने अनेक खिलाड़ियों से भेंट की। इनमें से प्रमुख थे तुर्रा के चित्तौड़ निवासी चैनराम गौड़, मोहनलाल सोमानी,, नानूराम तेली तथा नानालाल ब्राह्मण। नीमच के तुलसीराम गवालिया तथा शंकरलाल पुरोहित। निम्बाहेड़ा के कन्हैयालाल मोरवाल, मोहनलाल नाई, जीवन दर्जी, जगन्नाथ हलवाई, गिरधारी मोची तथा मोतीसिंह मराठा। कलंगी के घोसुंडा के खाजूबगश कागदी तथा हसनबेग कागदी। नीमच के इब्राहिम बोहरा तथा पूरण सुनार। ख्याल पुस्तकें तब बहुत कम कीमत में बेची जाती थीं। बेचने वाले मेलों-ठेलों में अच्छी बिक्री करते। शहरों और कस्बों में भी इनकी कुछ दुकानें होतीं। यह साहित्य फुटपाथी साहित्य या फिर ठेला साहित्य के नाम से जाना गया।

-म. भा.

बुन्देली, हिन्दी और बोलियां

-डॉ. बहादुरसिंह परमार-

हिन्दी बोलियों से ही जीवन-रस ग्रहण करती है। वह बोलियों का समुच्चय है। हिन्दी और बोलियां एक-दूसरे की पूरक हैं। बोलियां नहीं रहेंगी तो हिन्दी भी नहीं रहेगी। एक-दूसरे की परस्पर पूरकता का अहसास करते हुए बोलियों का विकास करना चाहिये।

हिन्दुस्तान के मध्य भूभाग में स्थित बुन्देलखंड अंचल का अतीत गौरवशाली रहा है। चेदि, जुझौति, दशार्ण देश की संज्ञायों से अभिहित अंचल चंदेलकाल तक उत्कर्ष की सीमाओं का स्पर्श करता रहा है। यशोवर्मन, धंग तथा गंड जैसे यशस्वी शासकों ने इस अंचल में अनेक जन कल्याणकारी कार्य संपादित कराये। पुरातन और स्थापत्य की दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण संरचनाएं आज इस बात की गवाही दे रही हैं।

चंदेलों के पराभाव से लगभग चार-पांच शताब्दी बाद वीर छत्रसाल के रूप में वीर बुन्देला शासक का अभ्युदय हुआ जिसने इस अंचल से अन्यायी शासकों का अंत कर इसका एकीकरण करने का महत्वपूर्ण प्रयत्न किया। इन्होंने बुन्देली अस्मिता को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने का प्रयास किया। राजकाज की भाषा के रूप में जन-भाषा बुन्देली का प्रयोग किया। निज-भाषा, निज-भूमि तथा निज-संस्कृति को स्वाभिमान से जोड़कर अंचल में राष्ट्रीयता तथा स्वदेश की भावना को विस्तारित किया। बुन्देली कवियों को संरक्षण प्रदत्त कर लोकभाषा को जन भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनने की प्रेरणा दी किन्तु आज आजादी के सत्तर साल बाद भी जनचेतना का प्रवाह धीमा है। शिक्षा का प्रसार कम है, अन्याय अनीति का प्रतिकार धीमा है जिससे महिलाओं व अन्य जन सामान्य की स्थिति देश के अन्य अंचलों की तुलना में बदतर है जिससे अंचल पिछड़े होने का विशेषण भोगने को अभिशप्त है।

महाराज छत्रसाल की मां लाल कुंवरि के उत्सर्ग को अंचल विस्मृत नहीं कर सकता। छत्रसाल की बहू जैत कुंवरि ने भी अपनी वीरता को साबित किया था। जब उनके पति जगतराज युद्ध में घायल हो गये तो उन्होंने मोर्चा संभाला था जिससे प्रसन्न होकर महाराज छत्रसाल ने उन्हें छह लाख की स्वतंत्र जागीर प्रदान की थी। अंग्रेजों से संघर्ष में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई एवं उनकी हमशक्ल झलकारीबाई का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

बुन्देलखंड अंचल में इस समय नशाखोरी की लत से जनजीवन अस्त-व्यस्त और त्रस्त है। गांव-गांव और जजरों-टोलों में नशा का गृह उद्योग संचालित हो रहा है। इससे गरीबों के घर तो बर्बाद हो ही रहे हैं, साथ ही नयी पीढ़ी में नशाखोरी की लत तेजी से बढ़ रही है। अपराधों में बढ़ोतरी हो रही है। चोरी, लूट तथा अन्य आर्थिक अपराधों के साथ सामाजिक हिंसाओं की घटनाएं भी नशा के कारण बढ़ रही है। नशा के समाप्त करने में महिलाओं की भूमिका प्रभावी हो सकती है। घर-गांव तथा समाज की महिलाएं नशा के विरूद्ध जागरूक हो जाएं तो सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

बुन्देली भाषा को समृद्ध बनाने के लिए उसमें विभिन्न विधाओं में रचनाओं का सृजन किया जा रहा है। आज बुन्देली में काव्य के साथ निबंध, नाटक, व्यंग्य, संस्मरण, समीक्षा, साक्षात्कार तथा डायरी का लेखन हो रहा है। बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोश, लोकोक्ति कोश तथा वृहद बुन्देली शब्द कोश का प्रकाशन उसके आगे बढ़ने का प्रमाण दे रहे हैं। विश्वविद्यालयों में बुन्देली साहित्य पर चर्चायें होने लगी हैं। बुन्देली में फिल्म बनने लगी और प्रदर्शित हो रही है किन्तु अभी भी तथाकथित पढ़े-लिखे लोगों को अपनी बोली में बात करने में हीनता का बोध होता है, जो चिंतनीय है।

हिन्दी बोलियों से ही जीवन-रस ग्रहण करती है। वह बोलियों का समुच्चय है। हिन्दी और बोलियां एक-दूसरे की पूरक हैं। बोलियां नहीं रहेंगी तो हिन्दी भी नहीं रहेगी। एक-दूसरे की परस्पर पूरकता का अहसास करते हुए बोलियों का विकास करना चाहिये।

डॉ. तुक्तक भानावत जार के जिलाध्यक्ष बने

उदयपुर। डॉ. तुक्तक भानावत जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के जिलाध्यक्ष बनाये गए।

शनिवार को हुई बैठक में डॉ. भानावत को सर्वसम्मति से उदयपुर इकाई का अध्यक्ष चुना गया। इस अवसर पर चुनाव पर्यवेक्षक मुकेश मुन्दड़ा ने बताया कि इसके लिए जार के चुनाव अधिकारी ललित शर्मा, प्रदेशाध्यक्ष नीरज गुप्ता ने भी अपनी स्वीकृति प्रेषित कर दी है। निवर्तमान अध्यक्ष पवन खाब्या ने डॉ. तुक्तक को कार्यभार सौंपा। इस अवसर पर डॉ. तुक्तक भानावत ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाले समय में जार संगठन को अधिक सक्रिय और पत्रकारों के हितार्थ मजबूत बनाया जाएगा और जार का सदस्यता अभियान प्रारंभ कर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। बैठक में सुमित गोयल, डॉ. रवि शर्मा, कपिल श्रीमाली, संजय खाब्या, भूपेश दाघीच, विकास बोकड़िया, पवन खाब्या, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, अजयकुमार आचार्य, अल्पेश लोढ़ा, राजेन्द्र हिलोरिया, शैलेष नागदा आदि ने डॉ. तुक्तक को बधाई दी।

पीआईएमएस में वृद्ध का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने 65 वर्षीय वृद्ध का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के वाइस चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि कान्तिलाल (65) की गांजा खाने की आदत की वजह से उसके शरीर की पूरी चमड़ी गल गई। यहां तक कि उसकी खाने की नली की चमड़ी और मूत्र एवं मल त्याग की नली भी अन्दर से गलने लगी। गत दिनों उसे गम्भीर मरणासन्न अवस्था में पीआईएमएस हॉस्पिटल लाया गया। यहां चर्म रोग विशेषज्ञा डॉ. शिवांगी शर्मा ने वृद्ध को टॉक्सिक एपिडर्मल नेक्रोलिसिस नामक बीमारी से पीड़ित पाया गया। इस पर मरीज को तुरन्त आईसीयू में भर्ती कर उसकी चिकित्सा शुरू की गई। अब मरीज की हालत में सुधार है।

शेखावत को राष्ट्रीय भू-विज्ञान पुरस्कार

वेदान्ता समूह की जस्ता-सीसा एवं चांदी उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य प्रचालन अधिकारी लक्ष्मणसिंह

शेखावत को खनन तकनोलॉजी क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों तथा राष्ट्र के विकास में योगदान के लिए वर्ष 2016 का राष्ट्रीय भू-विज्ञान पुरस्कार दिया गया। भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित भव्य समारोह में माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने यह सम्मान श्री शेखावत को प्रदान किया। इस अवसर पर केन्द्रीय कोयला, नवीकरणीय ऊर्जा एवं खान मंत्री पियुष गोयल एवं खान मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं अतिथि उपस्थित थे। हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन, पवन कौशिक ने बताया कि हिन्दुस्तान जिंक विश्व का सबसे बड़ा एकीकृत जस्ता उत्पादक है और भारत में चांदी का सबसे बड़ा उत्पादक के साथ दुनिया में अलौह धातु क्षेत्र उत्पादन में भारत का नेतृत्व भी करता है।

वंडर सीमेंट लि. द्वारा कम्प्यूटर वितरण

उदयपुर। वंडर सीमेंट द्वारा पंचायत समिति, निम्बाहेड़ा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पायरी, ग्राम

पंचायत कारुण्डा में सहायक उपाध्यक्ष (वाणिज्य) नितिन जैन एवं सरपंच, ग्राम पंचायत कारुण्डा सुनीता जाट द्वारा विद्यालय को कम्प्यूटर सेट एवं बच्चों के बैठने के लिये दरियां वितरित की गई। इस मौके पर जैन ने बच्चों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अर्जित कर अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने का आह्वान किया।

प्रारम्भ में प्रधानाचार्या कविता चौधरी ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान सरपंच, विद्यालय स्टॉफ एवं सम्मानित जनों द्वारा विद्यालय में बालिका शौचालय की मांग पर श्री जैन ने तत्काल सहमति दी।

इस अवसर पर वंडर सीमेंट के परिण्डे बांधों अभियान का शुभारम्भ भी विद्यालय प्रांगण में नितिन जैन एवं ग्रामवासियों द्वारा परिण्डे बांधकर किया गया। श्री जैन ने कहा कि आस-पास के सभी गाँवों में 150 परिण्डे बांध कर ग्रामवासियों को नियमित पानी भरने हेतु प्रेरित कर जिम्मेदारी दी जायेगी, जिससे भीषण गर्मी के दौरान भी पक्षियों की जीवन रक्षा हो पाये। कार्यक्रम में विद्यालय स्टॉफ के दिवाकर, मधुबाला, शंकरसिंह, हेमराज, महिपाल सिंह सहित प्रबन्धन समिति के सदस्यगण, ग्राम पायरी के नाथुसिंह, लक्ष्मणसिंह, भंवरसिंह एवं छात्र-छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन लता शर्मा, अब्दुल सत्तार ने किया और मोती सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

क्रिकेट में पीआईएमएस बना उपविजेता

उदयपुर। संपूर्णानंद मेडिकल कॉलेज जोधपुर द्वारा प्रथम राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 'स्पंदन-2017' का आयोजन

जोधपुर में किया गया। क्रिकेट प्रतियोगिता में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस) की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए उपविजेता का खिताब हासिल किया।

खेल प्रभारी राकेश पालीवाल ने बताया कि क्रिकेट प्रतियोगिता का अंतिम मुकाबला पीआईएमएस उदयपुर तथा एआईएमएस कॉलेज जोधपुर के बीच खेला गया जिसमें एआईएमएस कॉलेज विजेता तथा पीआईएमएस उपविजेता रहा। एथेलेटिक्स 100 मीटर रिले रेस में पीआईएमएस के रवि ब्रजानिया, विपुल चौधरी, महेश भाखर तथा प्रदीप बिश्नोई प्रथम रहे। 400 मीटर में शुभम नेहरा प्रथम, 800 मीटर में शुभम नेहरा द्वितीय, 200 व 100 मीटर रेस में महेश भाखर द्वितीय रहे।

छात्रों की इस उपलब्धि पर पीआईएमएस के वाइस चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने खेल से जुड़ी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने का आश्वासन दिया। प्राचार्य डॉ. ए.पी. गुप्ता ने छात्रों का सम्मान किया। रजिस्ट्रार देवेन्द्र जैन ने खिलाड़ियों को बधाई दी।

जाग्रत हनुमानजी को धराया छप्पन भोग

उदयपुर। नाइयों की तलाई स्थित श्री 1008 जाग्रत हनुमानजी मंदिर पर मंगलवार को हनुमान जयंती धूमधाम से मनाई गई। पुजारी छोगालाल वारी ने बताया कि हनुमानजी की स्वर्ण बरक और चांदी के डंकों से विशेष आंगी कर श्रृंगार किया गया और छप्पन भोग धराया गया। मंदिर परिसर में हनुमान चालीसा के पाठ के साथ भक्तों ने भजन प्रस्तुत किये। दिनभर मंदिर में दर्शनार्थियों की रेलमपेल रही। संध्या आरती में राजघराने के महेन्द्रसिंह मेवाड़ ने भाग लिया। आरती पश्चात दर्शनार्थियों को महाप्रसाद वितरित किया गया।

सुधारानी की कृति दिमाग की खुराफात पुरस्कृत

जबलपुर। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की अधिवक्ता सुप्रसिद्ध व्यंग्य लेखिका सुधारानी श्रीवास्तव को मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद द्वारा 'दिमाग की खुराफात' नामक व्यंग्य कृति पर प्रादेशिक राजेन्द्र अनुरागी पुरस्कार से अलंकृत किया गया। 'दिमाग की खुराफात' हास्य-व्यंग्य से लबरेज है। इसमें घोटालों एवं जुगाड़ तंत्र पर छोटे-छोटे लेखों के माध्यम से लेखिका ने बड़ी मीठी चोट कर व्यंग्य को श्रेष्ठता प्रदान की है। वर्ष 1976 से विधि व्यवसाय में संलग्न लेखिका के चार व्यंग्य संग्रह एवं एक गजल संग्रह प्रकाशित हैं। शब्द रंजन की बधाई।

पर्जन्य को कला-संस्कृति सेवारत्न सम्मान

उदयपुर। युगधारा के अध्यक्ष लालदास 'पर्जन्य' को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं पर कांकरोली की साहित्यिक संस्था राजस्थान साहित्यकार परिषद् द्वारा नाथद्वारा में 2 अप्रेल को आयोजित सम्मान समारोह में 'कला-संस्कृति सेवारत्न' से सम्मानित किया गया।

आयोजन के प्रमुख डॉ एम. डी. कनेरिया ने मेवाड़ी लाल पाग, विशिष्ट अतिथि डॉ ज्योतिपुंज ने उपरणा, मदनमोहन 'अविचल' ने शॉल, डॉ. भगवतीलाल व्यास ने प्रशस्ति पत्र तथा जयदेव गुर्जरगोड ने श्रीनाथजी की छवि प्रदान की। समारोह में डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. नवीन नंदवाना ने डॉ. कनेरिया की काव्यकृति 'अंतस की पीड़ा' भेंट की। इस दौरान नन्दकिशोर निर्झर, दलीचंद्र जैन, दिनेश छाजेड़ रेखा लोढ़ा, नीता चौबीसा, प्रमिला आर्य, धीरेन्द्र शर्मा और शरद बागोरा का भी सम्मान किया गया। समारोह में अब्दुल जब्बार, नारायणसिंह राव, प्रमोद सनाढ्य, सूर्यप्रकाश दीक्षित, पुरूषोत्तम पल्लव, डॉ. करूणा दशोरा, चेतन औदिच्य, मनोहर श्रीमाली आदि की साहित्यिक उपस्थिति वजनदार रही। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत डॉ मुरलीधर कनेरिया ने किया ।

कान्यो मान्यो

कौन जाने भाग्य में क्या कुछ लिखा...

करम पर तीन सल चढ़े देख कान्यो समझ गया कि मान्यो कुछ गहरे सोच में है। पूछा तो बोला- यूं ही विचार में पड़ गया था कि ऊंघ आ गई। एक मन तो कह रहा था कि सो जाऊं पर दूसरा मन बहुत सारे अधूरे पड़े काम पूरे करने का संकेत दे रहा था। कान्यो बोला, आज बड़े दार्शनिक अंदाज में लग रहे हो। दिल तो एक होता है पर मन दो बता रहे हो। महाकवि सूरदास ने यह तो कहा कि मन दस-बीस नहीं होते- 'उधो, मन नाहीं दस बीस', पर यह नहीं कहा कि कितने होते हैं।

मान्यो ने हुंकारा देते कहा- एक तो यह मन पकड़ में नहीं आता फिर भाग्य को भी कोई पकड़ नहीं पाया। उसमें क्या लिखा, कोई पढ़ नहीं पाया। कान्यो मसखरी पर उतर आया। कहने लगा, न कोई किसी के मन को जान पाया और न कोई किसी के भाग्य को ही कुरेद पाया कि उसमें क्या लिखा है?

मान्यो बोला- सच है। मन और भाग्य के साथ रहस्यमय बहुत सारी चीजें हैं। जैसे यह नहीं कहा जा सकता कि बादलों की गोद से निकलने वाली कौनसी बूंद का भाग्य प्रबल है वैसे ही संतान के बारे में भी नहीं कहा जा सकता कि कौनसी संतान श्रेष्ठतम सिद्ध होगी। कान्यो ने बात काटी। बोला- अधिक बूंदों का बरसना और अधिक संतान का होना भाग्य की बात है पर अब संतान पर तो सरकार ने ब्रेक लगा दिया है। नारा दिया है- बच्चे दो ही अच्छे।

मान्यो बोला- सरकार के लम्बे हाथ हैं। वह कहे वही मान्य होगा पर समय-समय की बात है। सो कैसे? कान्यो ने उत्सुकता दिखाई। मान्यो ने स्थिति स्पष्ट की- जितने भी महापुरूष हुए हैं वे अपने मां-बाप की पहली या दूसरी संतान नहीं थे। मसलन महात्मा गांधी चौथी मां के बेटे थे तो बाबा साहेब अम्बेडकर चौदहवीं संतान थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर भी चौदहवीं के चांद थे। सुभाषचन्द्र बोस चौदह संतानों में 9वीं संतान थे और स्वामी विवेकानंद कुल 10 संतानों में छठी संतान थे। कान्यो ने यह सुन ताज्जुब किया कि सरकार तो सर माथे पर लेकिन तुमने तो हकीकत का बयान किया।

उदयपुर में प्रदेश का पहला पार्किंग स्थल

उदयपुर। प्रदेश के पहले स्मार्ट अंडरग्राउंड पार्किंग का लोकार्पण नगर निगम परिसर में गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने किया। पार्किंग शुल्क की पहली पर्ची भी कटारिया ने कटाई और अपनी कार को पार्किंग स्थल में लेकर गए।

लोकार्पण के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गृहमंत्री कटारिया ने कहा कि उदयपुर शहर को स्मार्ट सिटी के रुप में विकसित करने एवं इसे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शहरों में शुमार होने लायक बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जा रही है। कटारिया ने क्षेत्र के विकास में मावली-मारवाड़ ब्रॉड गेज, मावली-बड़ीसादड़ी-नीमच रेल लाइन, उदयपुर-अहमदाबाद आमान परिवर्तन, देबारी-काया नेशनल हाइवे बायपास, संभाग की नदियों को जोड़ने जैसे बड़े प्रोजेक्ट की चर्चा की।

कार्यक्रम में सांसद अर्जुनलाल मीणा, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, यूआईटी चेयरमेन रवीन्द्र श्रीमाली, मेयर चंद्रसिंह कोठारी, पूर्व महापौर रजनी डांगी, पूर्व सभापति युधिष्ठिर कुमावत, डिप्टी मेयर लोकेश द्विवेदी, निर्माण समिति अध्यक्ष पारस सिंघवी, आयुक्त सिद्धार्थ सिहाग व समाजसेवी दिनेश भट्ट सहित अन्य जनप्रतिनिधि व अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गौरतलब है कि करीब साढ़े चौदह करोड़ रुपए की लागत से निर्मित अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त भूमिगत पार्किंग से उदयपुर शहर में पार्किंग की समस्या के निवारण में काफी हद तक सफलता मिलेगी। इसमें दुपहिया और चार पहिया वाहनों के लिए निर्धारित शुल्क पर पार्किंग की सुविधा उपलब्ध रहेगी। भूमिगत पार्किंग में 84 चारपहिया एवं 96 दोपहिया वाहन खड़े करने की क्षमता है। ऊपर छत पर 66 चार पहिया एवं 154 दुपहिया वाहन की पार्किंग की व्यवस्था है। अल्ट्रोसोनिक सेंसर्स, मास्टर कंट्रोलर, ऑटोमेटिक डिस्पेंसर मशीन, 16 सीसीटीवी कैमरा, स्वचालित बूम कैरियर, एलईडी इंडीकेटर्स, फायर फाइटिंग व वेंटिलेशन सिस्टम, निशक्तजन व वरिष्ठ नागरिकों हेतु लिफ्ट सुविधा जैसी अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त यह सार्वजनिक क्षेत्र का प्रदेश का पहला स्मार्ट अंडरग्राउंड पार्किंग है।

अनुष्का कोलगेट ऐक्टिव सॉल्ट की ब्रांड ऐम्बेसेडर

उदयपुर। बॉलीवुड स्टार अनुष्का शर्मा को कोलगेट ऐक्टिव सॉल्ट का नया ब्रांड ऐम्बेसेडर बनाया गया है। कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) के डायरेक्टर-मार्केटिंग एरिक जुमबर्ट ने कहा कि कोलगेट ऐक्टिव सॉल्ट टूथपेस्ट में नमक और मिनरल्स के गुण मौजूद है। इसका अनूठा फॉर्मूला दांतों को कैविटीज से सुरक्षित रखने के लिये जर्म्स से लड़ने में मदद करता है और मसूढ़ों को स्वस्थ एवं दांतों को मजबूत बनाता है। कोलगेट ऐक्टिव सॉल्ट आधुनिकता, रौब, बुद्धिमत्ता और आत्मविश्वास का प्रतीक है। हमें लगता है कि अनुष्का ब्रांड के लिये बिल्कुल उपयुक्त हैं। नये टेलीविजन विज्ञापन में अनुष्का एक रिपोर्टर के रूप में नजर आयेंगी और 'क्या आपके टूथपेस्ट में नमक है' पूछेगी।

अनुष्का शर्मा ने कहा कि कोलगेट जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड के साथ जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

जार एवं संप्रति द्वारा रमेशचंद्र अग्रवाल को श्रद्धांजलि

उदयपुर। दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह के चेयरमैन श्री रमेशचंद्र अग्रवाल के अचानक निधन के समाचारों से जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के सदस्यों को बड़ा आगात लगा।

जार द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में जार के पूर्व प्रदेश सचिव और उदयपुर जार के पूर्व अध्यक्ष रहे डॉ. तुक्तक भानावत ने कहा कि पत्रकारिता जगत में रमेशजी ने न केवल दैनिक भास्कर के माध्यम से अपनी पहचान बनाई अपितु पूरे देश में भास्कर की तरह पत्रकारिता से जुड़े अहम सवालों और खबरों से आम जनता तक नई चेतना जागृत की। अध्यक्ष पवन खाब्या ने कहा कि उदयपुर में भास्कर ने खोजी पत्रकारिता के माध्यम से जन-जन को प्रभावित किया। इस अवसर पर जार के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मुकेश मुंदड़ा, संजय खाब्या, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, अल्पेश लोढ़ा, अजयकुमार आचार्य, कपिल श्रीमाली, डॉ. रवि शर्मा आदि ने शोक व्यक्त किया।

सम्प्रति संस्थान के संस्थापक डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि मध्यप्रदेश से भास्कर को प्रारंभ कर रमेशजी ने अपनी जन्मभूमि का ऋण उतारने में जिस तेजी से पहल की वह सभी के लिए अनुकरणीय है। उन्होंने मध्यप्रदेश के बाद राजस्थान को अपना गढ़ बनाया यह उनकी बौद्धिक प्रखरता की तेजस्विता थी।

इस अवसर पर डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर, डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, कमर मेवाड़ी, डॉ. नरेन्द्र व्यास, जयप्रकाश व्यास, चांदमल पीतलिया, डॉ. कहानी भानावत, इकबाल सागर, जितेन्द्र मेहता, अनिल भानावत, विकल्प मेहता आदि श्रद्धांजलि दी।

दंडीस्वामी महन्त.....

(पृष्ठ दो का शेष)

सुबह उसने बताया कि वह भी राजस्थान के चित्तौड़ के पास चंदेरिया का है। दोनों मेवाड़ी में बातें करने लगे। साधु ने बताया कि चित्तौड़ पर अकबर ने आक्रमण किया और किले को चारों ओर से घेर लिया। ऊपर किले पर चढ़ने का कोई रास्ता नहीं बचा तो उसने सैकड़ों मजदूरों को बुलवाकर पत्थर-मिट्टी की एक ऊंची मगरी तैयार करवाई।

मजदूरों को एक-एक तगारी डालने का मेहनताना एक-एक मोहर दी गई। वह स्वयं भी उन मजदूरों में सम्मिलित था। बोला कि प्रारंभ के दिनों में एक टोकरी की एक मुहर पाने के कारण लालच में असंख्य मजदूर उलट पड़े लेकिन बाद में संध्या के वक्त ज्योंही मजदूर मिट्टी डालकर चलता कि धोखे से उसका सिर उड़ा दिया जाता। ऐसे तब के कई जीव वहां अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए जो अब भी वहीं भटक रहे हैं। मोहर देने के कारण वह मगरी मोहर मगरी के नाम से प्रसिद्ध हुई। तब उसकी उम्र अठारह वर्ष थी लेकिन बद्रीनारायण में भी जिस रूप में वह देखा गया, उसकी उम्र पचास से अधिक नहीं लग रही थी।

ऊंट पगा साधु :

दीवाली के एक दिन पूर्व रूप चतुर्दशी को रखेश्वर में एक साधु ऐसा मिला जिसका एक पांव ऊंट का था। देखते-देखते उसने अपना चींपिया जमीन पर खड़ा किया तो पास के तंबू में आग लग गई। लोगों ने बताया कि वह ऊंटपगा साधु कभीक नजर आता है। करीब हजार वर्ष उसकी उम्र कही जाती है। ऐसे अनुभवों के खजाने मोहनानन्द का मन अभी भी चरैवेति बना हुआ है।

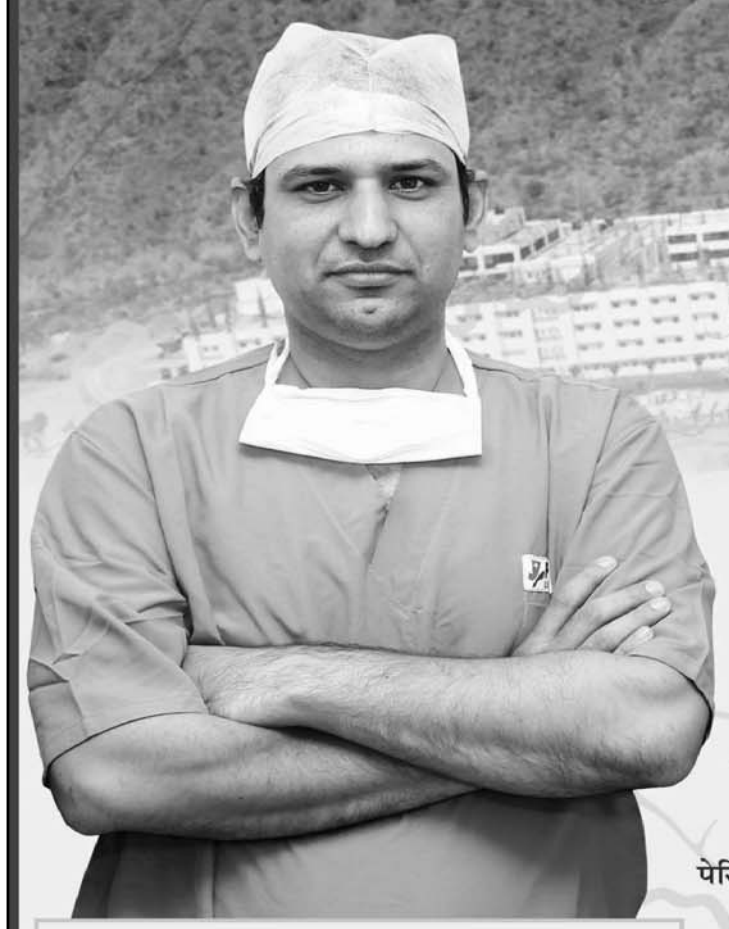

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।